© 2017 IJSRST | Volume 3 | Issue 8 | Print ISSN: 2395-6011 | Online ISSN: 2395-602X
Themed Section: Science and Technology

प्राचीनता की दृष्टि से व्याकरणशास्त्र

निधि यादव
(जे.आर.एफ.)
शोधच्छात्रा,
संस्कृत विभाग
इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद।

वैदिक दृष्टि से व्याकरण को सभी वेदा›ों में श्रेष्ठ और साथ ही उसे उत्तरा विद्या की संज्ञा से अभिहित किया गया है।[1] प्राचीन भारतीय वा›मय को दृष्टिपात करने पर व्याकरण–शास्त्र भाषा शिक्षा के अपूर्व साधन के रूप में प्रतीत होता है। प्राचीन काल में अनेक ऋचाओं का प्रणयन हुआ किन्तु लेखन के अभाव में उनको जीवित रखने हेतु वैदिक ऋचाओं को कण्ठस्थ करना पड़ता था। कण्ठस्थीकरण की इस प्रक्रिया में लोगों के उच्चारण में भिन्नता तथा स्वरों के आरोहावरोह में वैषम्य आने से वैदिक शब्दों के उच्चारण आदि में प्रत्येक शाखा के लिये उच्चारणज्ञापक सूत्र समूहों की रचना की जाने लगी और वेदों की प्रत्येक शाखा के लिये ऐसे सूत्रों की रचना हुई जो–प्रातिशाख्य के नाम से जाना जाता है। ब्राह्मण ग्रन्थों में तो अनेक स्थानों पर व्याकरणशास्त्र की पारिभाषित शब्दावली प्राप्त होती है और जहाँ एक ओर शुक्लयजुर्वेदीय 'शतपथ ब्राह्मण' में एकवचन तथा बहुवचन और छान्दोग्योपनिषद् में स्वर, उष्म, स्पर्श आदि वर्ण विभाजक संज्ञाओं का उल्लेख हुआ है वहीं दूसरी ओर सामवेद संहिता के मन्त्रों में व्याकरण निर्दिष्ट पदचतुष्टय का भी उल्लेख प्राप्त होता है।[2] व्याकरणशास्त्र का मूल रूप तो हमें ऋग्वेद के अन्तिम चरण में ही दृष्टिगत होने लगता है। जिसमें 'चत्वारि श्रृ›ा त्रयो अस्य पादाः' की व्याख्या में 'नामाख्यातोपसर्गनिपाताः' और 'सप्तसिन्धवः' को 'सप्तविभक्तयः' कहा गया है। यदि समग्र रूप में देखा जाय तो ऐसा प्रतीत होता है कि व्याकरणशास्त्र की परम्परा अत्यन्त ही प्राचीन रही है जिसका मूल स्त्रोत वेद है। किन्तु प्राचीन वैयाकरणों का स्पष्ट उल्लेख कहीं प्राप्त नहीं होता और भारतीय वैयाकरणों में पाणिनि को अग्रगण्य माना जाता है कारण यही रहा कि इनके पूर्व के वैयाकरण पाणिनि जैसे महत्त्व नहीं प्राप्त कर सके और कालान्तर में उनका नाम भी लुप्त होने लगा। इसी पाणिनि परम्परा को आगे बढ़ाने में पतञ्जलि और कात्यायन का महत्वपूर्ण योगदान रहा है जो कि वर्तमान में भी दृष्टिगोचर है।

यदि व्याकरणशास्त्र की प्राचीनता पर विचार किया जाय तो प्रश्न यह उठता कि भारतवर्ष में व्याकरणशास्त्र का आरम्भ कब हुआ, पहले वैयाकरण कौन हैं, इसके सर्वेक्षण से यह पता चलता है कि आज के समय में जो व्याकरण ग्रन्थ प्राप्त हैं उनके अतिरिक्त अन्य वैयाकरण ग्रन्थ जो अति–उपयोगी न होने से नष्ट भी हो गये। आदिकाव्य रामायण में महर्षि वाल्मीकि ने 'सोऽयं नवव्याकरणार्थवेत्ता' कहकर नौ वैयाकरणों की ओर सšऽत तो किया है। किन्तु उनका नामोल्लेख नहीं किया है, महाकवि भास्कराचार्य ने भी आठ

[1] व्याकरणं नामेयं उत्तरा विद्या–महाभाष्य–1/2/32/

प्रधानं च षटषु अ›ेषु व्याकरणम्।

[2] सर्वे स्वरा ऐन्द्रस्यात्मानः।

वैयाकरणों[3] का उल्लेख किया है और इन्हीं वैयाकरणों का उल्लेख बोपदेव ने अपने ग्रन्थ कविकल्पद्रुम[4] में किया है।

ऐतिहासिक दृष्टिकोण से व्याकरणशास्त्र की प्राचीनतम एवं पुष्ट प्रमाण स्वरूप महर्षि पाणिनि ने अष्टाध्यायी में जिन आचार्यों का उल्लेख किया है वे ही दस वैयाकरण प्रमुख माने जाते हैं जिनमें आपिशलि[5], कश्यप[6], गार्ग्य[7], चाक्रवर्मन[8], गालव[9], शाकल्य[10], शाकटायन[11], सेनक[12], स्फोटायन[13], भारद्वाज[14] का उल्लेख है। इसके अतिरिक्त अनेक वैयाकरणों का उल्लेख प्राप्त होता है जिनमें महेश प्रवक्ता महेश, ऐन्द्रप्रवक्ता इन्द्र, एन्द्रप्रचारक भारद्वाज, जैमिनिस्मृति भागुरि मुनि, बादरायण स्मृति काशकृत्स्न, शौनक शिष्य व्याडि, जातुकर्ण व्याघ्रपाद, उदव्रजी, सुनाग, पौष्करसादि, वाजप्यायन आदि हैं, जिनका तथ्यात्मक प्रमाण कहीं भी नहीं प्राप्त होता है। इसी कारण अष्टाध्यायी में वर्णित वैयाकरणों एवं सम्प्रदायों को ही प्रमाणिक माना जाता है।

महर्षि पाणिनि ने जिन सम्प्रदायों का उल्लेख किया है जिनमें कार्मन्दविवरण जो कि संन्यासी सम्पद्राय में प्रचलित है कि–अवैयाकरण शिष्यों हेतु व्यक्ताधूत क्रान्तदर्शी भगवान् कर्मन्द ने भिक्षु सूत्र के पूर्ववृत्तरूप में व्याकरण सम्बन्धी अनेक सूत्रों की रचना की जिसका उल्लेख अष्टाध्यायी में कर्मन्दकृशाश्वादिनि[15] सूत्र द्वारा तथा काशकृत्स्न सम्प्रदाय का उल्लेख वामन जयादित्य काशिका में 'अयोध्यायाः परिमाणस्य सूत्रस्य त्रिकं

---

[3] अष्टौ व्याकरणानि षट् च भिषजां व्याचष्ट ताः संहिताः।

षट् तकीन् गणितानि पञ्च चतुरो वेदानधीते स्म यः।

रत्नानां त्रितयं द्वयं च बुबुधे मीमांसयोरन्तरं।

सद्ब्रहमैक अगाधबोध महिमा सोऽस्याः कविः भास्करः।।

(भास्कराचार्य प्रणीत–लीलावती)

[4] ऐन्द्रश्चन्द्रः काशकृत्स्नापिशली शाकटायनः।

पाणिन्यमरजैनेन्द्रा जयन्त्यष्टादिशाब्दिकाः।।

(कल्पद्रुम)

[5] अष्टाध्यायी–6/1/92।

[6] अष्टाध्यायी–9/2/25, 8/4/67।

[7] अष्टाध्यायी–7/3/99, 8/3/20, 8/4/67।

[8] अष्टाध्यायी–6/1/130।

[9] अष्टाध्यायी–6/3/61, 7/3/99, 8/4/67।

[10] अष्टाध्यायी–1/1/16, 6/1/127, 8/3/19।

[11] अष्टाध्यायी–8/3/12, 8/4/50।

[12] अष्टाध्यायी–5/4/112।

[13] अष्टाध्यायी–6/1/123।

[14] अष्टाध्यायी–7/2/63।

[15] अष्टाध्यायी–4/3/111।

काशकृत्स्नं[16] 'त्रिका काशकृत्स्ना'[17] सूत्रों द्वारा, सेनकीय व्याकरण सम्प्रदाय का अष्टाध्यायी में –गिरेश्च सेनकस्य' सूत्र द्वारा काश्यपीय व्याकरण सम्प्रदाय का 'तुपिमृषिकृशेः काश्यपस्य'' तथा 'नोदान्तस्वरितोदय–मगर्ग्यकाश्यगालवनाम्'' सूत्रों द्वारा स्फोटायन सम्प्रदाय का 'अवइ स्फोटायनस्य' सूत्र द्वारा, चाक्रवर्मणीय व्याकरण सम्प्रदाय का 'ई 3 चाक्रवर्मणः'[18] सूत्र द्वारा आपिशलि व्याकरण सम्प्रदाय का 'आपिशलः पाणिनीये शास्त्रे'[19] सूत्र द्वारा व्याडि व्याकरण का सम्बुद्धौ शाकल्यस्येतावनार्षे[20], इकोऽसवर्णे शाकल्यस्य ह्रस्वश्च[21], लोपः शाकल्यस्य[22], सर्वत्र शाकल्यस्य[23] सूत्रों द्वारा, गालव व्याकरण का इको ह्रस्वोऽङ्यो गालवस्य[24], तृतीयादिषु भाषितुपंस्कं पुंवद् गालवस्य[25], अङ्गार्ग्यगालवयोः[26], नोदान्तस्वरितोदयमगर्ग्यकाश्यगलवनाम्[27] सूत्रों द्वारा, भारद्वाजीय व्याकरण का ''ऋतो भारद्वाजस्य'[28] सूत्र द्वारा किया गया है।

अतः उपरोक्त तथ्यों से यह स्पष्ट है कि पाणिनि के पूर्व से ही व्याकरणशास्त्र का उद्भव एवं उसकी विकसित परम्परा का प्रचलन हो चुका था। किन्तु पाणिनि से पूर्व व्याकरणशास्त्र की रचना तो हुई थी परन्तु उस समय लक्ष्य और लक्षण अर्थात् शब्द और उनकी सिद्धि के नियम को ही व्याकरण माना जाता था। सूत्र रूप में व्याकरण रचना का स्पष्ट स्वरूप पाणिनि के समय से ही प्राप्त होता है किन्तु इस आधार पर व्याकरणशास्त्र की प्राचीनता का निर्धारण नहीं किया जा सकता अपितु पूर्व वैयाकरणो एवं सम्प्रदायों के आधार पर उसकी प्राचीनता सिद्ध ही है।

---

[16] काशिका–5/1/58।

[17] काशिका–4/2/65।

[18] अष्टाध्यायी–6/1/130।

[19] अष्टाध्यायी–6/2/26।

[20] अष्टाध्यायी–1/1/16।

[21] अष्टाध्यायी–6/1/127।

[22] अष्टाध्यायी–8/3/19।

[23] अष्टाध्यायी–8/4/51।

[24] अष्टाध्यायी–6/3/61।

[25] अष्टाध्यायी–7/1/47।

[26] अष्टाध्यायी–7/3/99।

[27] अष्टाध्यायी–8/4/67।

[28] अष्टाध्यायी–7/2/63।